दशमः पाठः

# Ñf"kdk% deZohjk%

सूर्यस्तपतु मेघाः वा वर्षन्तु विपुलं जलम्।
कृषिका कृषिको नित्यं शीतकालेऽपि कर्मठौ ।।1।।

ग्रीष्मे शरीरं सस्वेदं शीते कम्पमयं सदा।
हलेन च कुदालेन तौ तु क्षेत्राणि कर्षतः ।।2।।

पादयोर्न पदत्राणे शरीरे वसनानि नो।
निर्धनं जीवनं कष्टं सुखं दूरे हि तिष्ठति ।।3।।

गृहं जीर्णं न वर्षासु वृष्टिं वारयितुं क्षमम्।
तथापि कर्मवीरत्वं कृषिकाणां न नश्यति ।।4।।

तयोः श्रमेण क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि सर्वदा।
धरित्री सरसा जाता या शुष्का कण्टकावृता ।।5।।

शाकमन्नं फलं दुग्धं दत्त्वा सर्वेभ्य एव तौ।
क्षुधा-तृषाकुलौ नित्यं विचित्रौ जन-पालकौ ।।6।।

not to be republished

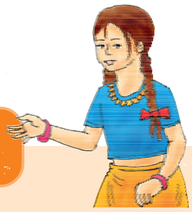

## शब्दार्थाः

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तपतु** | – | तपाये, जलाये | may burn |
| **विपुलम्** | – | अत्यधिक | in large amount |
| **कर्मठौ** | – | निरन्तर क्रियाशील | active |
| **सस्वेदम्** | – | पसीने से युक्त | full of sweat |
| **पदत्राणे** | – | जूते | shoes |
| **वसनानि** | – | कपड़े | clothes |
| **जीर्णम्** | – | पुराना | old |
| **वारयितुम्** | – | दूर करने में | in removing |
| **क्षमम्** | – | समर्थ | able |
| **सस्यपूर्णानि** | – | फसल से युक्त | full of crops |
| **धरित्री** | – | पृथ्वी | earth |
| **कण्टकावृता** | – | काँटों से परिपूर्ण | full of thorns |
| **क्षुधातृषाकुलौ** | – | भूख प्यास से बेचैन | distressed with hunger and thirst |

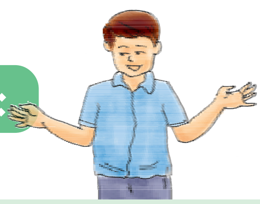

## अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत–

| | | |
|---|---|---|
| सूर्यस्तपतु | जीर्णम् | शीतकालेऽपि |
| वारयितुम् | ग्रीष्मे | सस्यपूर्णानि |
| पदत्राणे | कण्टकावृता | क्षुधा–तृषाकुलौ |

© NCERT not to be republished

**2. श्लोकांशान् योजयत–**

| क | ख |
|---|---|
| गृहं जीर्णं न वर्षासु | तौ तु क्षेत्राणि कर्षतः। |
| हलेन च कुदालेन | या शुष्का कण्टकावृता। |
| पादयोर्न पदत्राणे | सस्यपूर्णानि सर्वदा। |
| तयोः श्रमेण क्षेत्राणि | शरीरे वसनानि नो। |
| धरित्री सरसा जाता | वृष्टिं वारयितुं क्षमम्। |

**3. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत–**

| | |
|---|---|
| यथा– कृषकाः शीतकालेऽपि कर्मठाः भवन्ति। | आम् |
| कृषकाः हलेन क्षेत्राणि न कर्षन्ति। | न |
| (क) कृषकाः सर्वेभ्यः अन्नं यच्छन्ति। | |
| (ख) कृषकाणां जीवनं कष्टप्रदं न भवति। | |
| (ग) कृषकः क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि करोति। | |
| (घ) शीते शरीरे कम्पनं न भवति। | |
| (ङ) श्रमेण धरित्री सरसा भवति। | |

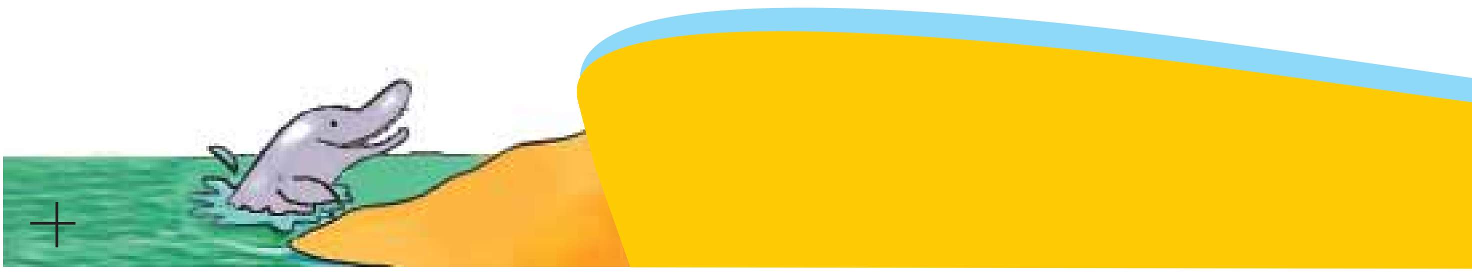

© NCERT not to be republished

**4. मञ्जूषातः पर्यायवाचिपदानि चित्वा लिखत–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रविः | वस्त्राणि | जर्जरम् | अधिकम् | पृथ्वी | पिपासा |

वसनानि ....................

सूर्यः ....................

तृषा ....................

विपुलम् ....................

जीर्णम् ....................

धरित्री ....................

**5. मञ्जूषातः विलोमपदानि चित्वा लिखत–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धनिकम् | नीरसा | अक्षमम् | दुःखम् | शीते | पार्श्वे |

सुखम् ....................

दूरे ....................

निर्धनम् ....................

क्षमम् ....................

ग्रीष्मे ....................

सरसा ....................

© NCERT not to be republished

**6. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-**

(क) कृषकाः केन क्षेत्राणि कर्षन्ति?

(ख) केषां कर्मवीरत्वं न नश्यति?

(ग) श्रमेण का सरसा भवति?

(घ) कृषकाः सर्वेभ्यः किं किं यच्छन्ति?

(ङ) कृषकात् दूरे किं तिष्ठति?

© NCERT not to be republished